



ASHA ARCHIVES

2825

संपूर्ण चक्र संख्या

आशा भद्र काशी

2825

SHA ARCHIVES

सुच
ना

ॐ नमः श्रीवक्त्रसुचनाय
जसकगुनवचनलकम
नाचनमः ॐ ॥ ॥ वरु
यतिभयंभकगुनयत्यसाः
श्रीमन्वजजकायजकि



॥ ३ ॥ ॐ श्रीः ॐ श्रीमह
नायसंम्यज्ञावरासनं
रुकादिसमग्रं सकात्रयं
दनममायंज्ञानसकृदं
त्रियवकवरुन ॥ यं वः

सुनंठिकानायशायजगताममाः ॥ वावकावजजकि नवठि प्रसक्तव
॥ लाकारुयवर्हन्सावनिता नमः सदा ॥ ॥ ॐ स्वरावशुका सर्वधर्माणां
स्वरावशुकाहं सूर्यगोम्यानवजस्वरावात्मकाहं ॥ मटिस्वाकात्रनयनानावशुन
श्रीकावमकयग्यानं हं कालं हं वरुजिगं ॥ नृकावलयनासार्थिकावमकवित्तं ॥
सर्वसुखधनहं हं ॥ मुकवर्हं हिरुजसुखं मानगानं तावयत् ॥ नदनृकव

सम
आ

धने॥ दक्षिणसुआकात्रयसूर्यमधुले॥ वामसुआकात्रयवदुमधुले॥ उँ ह ४
नमः श्रीस्वाहा॥ उँ वायव्यदहहं हं हा४ हृ हृ हं॥ उँ वेदांथां श्रीमां ऊं कीं हं हं हृ हृ
हृ॥ यथा वादन॥ उँ हं स्वाहा॥ वज्रं वज्रं॥ उँ हाः स्वाहा॥ यथा यथा॥ उँ वज्रसूत्रं
येहात॥ उँ वज्रवत्तमनूरुवां वज्रकर्मणि॥ यिनवज्रकर्मकलहं वं॥ उँ ट किं ऊं हं
॥ ३ ॥ संखाधिस्यन॥ उँ श्रीवज्र हं हं नमः हं हं हृ॥ जाकिनिजातं समं

उँ वज्रनायायस्वाहा २ अंजक ॥

संखाहा॥ उँ वायव्यवाहं हं हृ॥ उँ वायव्यवाहं सर्वविद्यानस्वाययहं हृ॥ उँ वज्र
पूयस्वाहा॥ स्वाहा॥ उँ वज्रधूयस्वाहा॥ धन॥ उँ वज्रगन्धस्वाहा॥ विक॥ उँ वज्रदी
यस्वाहा॥ मरु॥ उँ वज्रनेयययस्वाहा॥ नेयया॥ उँ अकात्रमस्वसर्वधर्मानां मायन
यन्नस्वाहा॥ उँ आहं स्वाहा॥ वलिअधिस्यन॥ उँ आ४ हं स्वाहा॥ मधुलअधिस्यन॥
मधुयाहं॥ धन॥ उँ ह ४ हा४ कीं४ अ४ वेस्वाहा॥ यन४ यी वागुचारावयत्

सं

॥ कौं कावनयमराजने मां कावनमामकिरु झादिरु जावजवज हसु हूं कावलाः
कात्याकुषु द्वि तु जं वजवज हसु कथाः संपट्याग्नममहा ग्राग्नधड वि तु गं यम
न॥ पुनः हः साः कौंः अः गे स्वाहा हूं ॥ उं सर्वरु कामिनि सर्वरु रुखधनि
येव जीनिकारध धनि सर्व उययायिनि स्वधय स्वधय हूं ॥ उं अमरु अमरु गं यव
सय हूं ॥ उं हका नरु नरु वधु हा कावनवचना गनं कौं कावनवीर्य हसु वज

कावननमरु नयय गुरु ॥ ॥ उं वज रुम हूं ॥ ये जां उं आं गं वां दं मां किं कां नं कां
की धं गं थं सैं सैं मं कैं वैं ॥ उं यी ॥ ययी ० रु आय रु रु रु आय रु रु मलाय का मलाः
समसा नाय सामान ॥ न ना अंग न्या ग ॥ उं ह ० नमः कौं ० स्वाहा ॥ हूं वायट द ह हूं
हा ० रुट रुट हूं ॥ उं वं हूं यो कौं मां कैं कौं हूं हूं रुट रुट ॥ उं ह नम नरु हूं ॥ उं यागम
नरु हूं ॥ उं आत्मानमनरु हूं ॥ ॥ न न ० ख ह दये अका नय उमह लाय निः

सं

कृष्णं कं वं आः कं वं न कं हं दृ दृ काना नं ४॥

॥ ॐ अलिकालियकि कृष्णः

युक्तनक कृष्णवर्धमयार्थ ४ नद कृष्णयनिमनवकयमवजवागिभुक्ति कृष्णान् ॥ अयस्कं
धवेवावनावदना स्कंधवजसूर्य ४ सस्रन स्कंधयमनखलं सस्कावस्कंधवज
नाजं विस्मन स्कंधवजसुखं सर्वनथागतसुखी हनकवर्ज ॥ वरुणामाहवजी स्वतः
यादववजीयानथानीयावजीवकयागवजीयसामासूर्यवजिः सर्वाननष्टि च

४

यवजी ॥ यथी वीधरुयानि आयप्रा तुमावीधीन जाधरुवाकवनी वायुधातुयम
नखधन आकासधातुयमकाविधी ॥ यत्र ना ४ अलिकालियकि मध्यलं कालः
सूर्यमधुलं नमध हं कालयलिधामरुगवकं कृष्णवर्धय हं जं यथमकुजाः
सां वजयधंधं दितीयासां वर्जकं नीयागधं रूतियासां उमदखसां गधनं
वउमयं कृष्णामेन कं पीतं काकासाकृष्ण उन्का गंधा माखाना गंधा नका गुरु

सं

लाग्वायीनायमजानिहृषीकायमइतीयो नत्रकायमइती नत्रकायममर्थनीग्वा
मरुषा॥ॐ सुनी सुनी हूं हूं ॥ॐ गुरु २ हूं हूं ॥ॐ गुरु कायय २ हूं हूं ॥ॐ आ
नयहारगवनविद्यानाअथ हूं हूं ॥ॐ नमो आरभं कावनसूर्यमधुना नमध्व हूं का
लेधविश्ववज्र हूं कालाधिष्ठितं ॥ॐ नमो भिनायवरुलपुमानं वज्रकलिका नृपेश्वराम
नं वज्रमथेरुमिं विहाय ॥ॐ नमो दनीवजीरु वं वज्रवं वं ॥ॐ वज्रपाका नृपेश्वर हूं ॥ॐ

जं

वज्रयं जल हूं व हूं ॥ॐ वज्रविमान हूं व हूं ॥ॐ वज्रसमजाय ग्रां स ग्रां ॥ॐ वज्र कावान
नाक हूं ॥ॐ कालजातदिग्वाकालसमिक्थनिबिगितान ॥ॐ आदिविद्यान रुदयकील
यन ॥ॐ यय २ यानय २ सर्वइशान हूं हूं ॥ॐ कीलय २ सर्वपायान हूं हूं ॥ॐ वज्रकील
यवज्रधवा आस्ययनि सर्वविद्यविनायका नां काय वाक् विरु वज्रान कीलय हूं हूं
हूं ॥ॐ वज्रमूलवज्रकीलय आकाटयमाकाटय हूं हूं ॥ॐ नितिनिविप्रनृत्ता

सं

दवाय हूं हूं दृष्ट ॥ ॥ ॐ निकाय चक्र ॥ ॥ ॐ काका गंध हूं हूं दृष्ट ॥ ॐ उग्र
का गंध हूं हूं दृष्ट ॥ ॐ खाना गंध हूं हूं दृष्ट ॥ ॐ पुक ना गंध हूं हूं दृष्ट ॥ ॐ यम कानिय हूं
हूं दृष्ट ॥ ॐ यम इनीय हूं हूं दृष्ट ॥ ॐ यम कुरीय हूं हूं दृष्ट ॥ ॐ यम मथनीय हूं
हूं दृष्ट ॥ ६ ॥ इति अक्षर ॥ ॥ ॐ वरुण गृहाय स्वाहा ॥ ॐ गङ्गाय स्वाहा ॥
ॐ काली कुलाय स्वाहा ॥ ॐ कलंक रंजनाय स्वाहा ॥ ॐ अरुद्र हाभय स्वाहा ॥ ॐ लक्ष्मी व

वन हं का सुनाय स्वाहा ॥ ॐ धालांधका नाय स्वाहा ॥ ॐ किलि रत्ना लवाय स्वाहा ॥ ६ ॥
ॐ निसि गमन ॥ ॥ यक्ष यक्ष नयूजा ॥ लाग्या ॥ ॥ ॐ वज्र विन हूं ॥ ॐ वज्र वंभु
॥ ॐ वज्र मंद गी ॥ ॐ वज्र मूज ॥ ॥ ॐ वज्र ना गंध हूं ॥ ॐ वज्र कमान ॥
ॐ वज्र गी न की ॥ ॐ वज्र नृप ॥ ॐ वज्र पृथ हूं ॥ ॐ वज्र धूप ॥ ॐ वज्र वला कि न की
ॐ वज्र गंध ॥ ॐ वज्र दर्शन हूं ॥ ॐ वज्र वज्र ॥ ॐ वज्र वज्र ॥ ॐ वज्र वज्र ॥ ॐ वज्र वज्र ॥

सं

॥ धृष्ट वादनमुनि ॥ सर्वरूपसंज्ञाहं जगदर्थप्रसादकं विकामनिग्रथारुहं
श्रीसम्बन्धनमस्तुते ॥ व्याकृतिविश्वमहासुनं सर्वमनिसदास्मिन् ॥ कृपाकाधमहाबोद्धुं
सम्बन्धनमस्तुते ॥ ॥ मन्त्रनर्त्ये ॥ ॐ नमो गवतं वीनवीलसुवायहूं हूं रुट् ॥ ॐ
नमो गवतं महाकल्याणिसनिरायहूं हूं रुट् ॥ ॐ नमो जयमहं यत्कटहं ववायेहूं हूं
रुट् ॥ ॐ नमो उज्ज्वलकवागुतीषधमन्वायहूं हूं रुट् ॥ ॐ नमो सुरमुकुजराधवायहूं हूं

सं

रुट् ॥ ॐ नमो यनमुयासायनं गुलनखोगवागिरुहूं हूं रुट् ॥ ॐ नमो व्याघ्रवर्माविनयवा
यहूं हूं रुट् ॥ ॐ नमो महाधर्माधकात्रायवपूषायहूं हूं रुट् ॥ नमो वामहस्तकनमध्व
नकयज्जदवकमनश्चात्वा ॥ ॥ ॐ वज्रवानाहीयहूं हूं रुट् ॥ ॐ होयों यामिनीय
हूं हूं रुट् ॥ ॐ जीमोमाहिनीयहूं हूं रुट् ॥ ॐ जीमोमोमिनीयहूं हूं रुट् ॥ ॐ हूं हूं संज्ञा
मिनीयहूं हूं रुट् ॥ ॐ रुट् श्वविकायहूं हूं रुट् ॥ ॐ हूं वज्रसत्वायसाहा ॥ ॐ नमो हि

सं

वेमावनायसाहा॥ॐ स्वाहा॥ हूं यन्नरसुखाय हूं स्वाहा॥ॐ वाषट् दहन्नरसं
वायसाहा॥ॐ हूं हूं हावजसूर्यसाहा॥ॐ रुद्रपद्माश्वत्थायसाहा॥ कवमुचि
मधसुययित्वा॥ ॥यक्षयहाप्रयुजामुनिकृत्वा॥ ॥यामीन्यामवन्माः
हिनीरुगवतिसंवातिनीसर्वदामुक्तानिन्यसुधात्रासुविनायारगध्वनीवृत्तीकाः
वलावाउउकसा नमस्वीलीनाभीगारगोविदीसामाधूमसनायगुहगंवन्द

स्वदकाद्युवं॥ ॥उत्पादरुंगवहिनावनदहधात्रिकयुहाविजयिनीयः
विधीउन्नीवजांगधायुधगलेः समलकतांगीमखययामिगनतंजननीजिना
नां॥ ॥ॐ नमोऽरुगवतिवज्रवादी हूं हूं रुद्र॥ॐ नमोऽरुगवतिज्जिगज्य
नाजिगज्जवाकमाकनहूं हूं रुद्र॥ॐ नमः सर्वरुतेरुयावहहूं हूं रुद्र॥ॐ नमो
वजासनज्जिगज्जयनाजिगवग्यंकनिमदहाविनी हूं हूं रुद्र॥ॐ नमोऽरुगव

सं

दीक्षाधनिकवात्रिनीहैंहैंरुट्॥उंनमासुजासुनीमात्रनीसुपुहदिनीयत्राऊयहैं
 हैंरुट्॥उंनमाऊयविऊयऊरुहिरुहिरुमाहनीयहैंहैंरुट्॥उंनमावजासवी
 वऊवात्राहीवऊयामीनीनिकामयनीरुहिरुहैंहैंरुट्॥ ॥अस्ययदमऊ
 विगमाऊनयदयिऊयाऊ॥ ॥नमायायदमनोऊनकात्रिकमनमादितः
 मयमविननिहिरुहिरुनांयमिदममैयोयननःयननयनंसम्वनविद

११

आवकव ऊंजिनारुमठजिनसुंसंउगात्रिकगलानिअनमादितानिबोरधोसम्य
 कयत्रिधामयामिवजिनवलानीनद्रिकुयंमनयंयाऊमासि सर्वरावनवारधोवि
 कुंअनरुवमारुनथासवनि॥ ॥आदियाग॥ ॥नमोमेगीकनधः
 मदिनायकामीवउवुमविहानाविहावयन॥उंखरावगुद्धासर्वधर्माख
 रावगुद्धाहंशुनीगाहनवऊखरावोसकाहं॥ ॥विहमाऊउवेनिस

स

न वाचि संहा त्रय प्रधा न्॥ न ता य वि धा न व सा न्॥ शुं च ना वि वृ ष्ट ४ यं काल न वा य
म धु ग न्ध रं नी लं व जं क रं ॥ न इ य त्रि वं का त्र ध म्भ मि म धु वं त्रि का धं त्र क त्र रं क
तं ॥ न इ त त्रि वं का त्र न व र न म धु लं व उ त्र स स न य ना क रं ॥ न इ य त्रि लं का त्र
ध य धि वि म धु लं व उ त्र सं यि त का र ध य त्रि धि कं व जं क रं ॥ न इ य त्रि सं का त्र
ध स म त्र म धु लं व उ त्र स व उ त्र त्र म यं म्भ म्भ व य र्ना हि तं ॥ न इ य त्रि उ

१२

का त्र ध क र ग नं व उ त्र स व उ त्र व र्ना हि तं ह्वा ना र्द्ध ह्वा न व क्ति क क
म मी य त्र य र्थ नं ॥ न इ य त्रि यं कौ व न वि ध य म्भ ॥ न म र ध रं का त्र ध वि स
व रं ॥ न म र ध यं का त्र ध क र द न वि स य म्भ ॥ न इ य त्रि आ लि का लि द्वि गुर ध व उ त्र म धु
लं स य म धु लं न थ म र ध आ का स र्द्ध का त्र धै र ल न सं र्द्ध धा त्र कं न स र्व य त्रि न
मा न र ध य म धु लं र्थी व क स म्भ नं र ग व नं मा त्मा न रा व य न् ॥ न य मा त्मा नं व उ

सं

मखंमलमखंरुक्कवा मस्यामंयश्चिमत्रकं दक्षिणयी तंयतिमखत्रकयउत्रप्रिन्नउ
विरुगा ननंउष्टाकटहीयधंविश्ववज्जंरुक्कमोलानऊयमकृमिनंवाभवलिताई
वउधालिधंदक्षिणयुक्कमूधंउऊमालागारि तंयत्रकयालधालिधंदादभउऊंय
थमउऊ दयधवऊवावाहीआलिगितसुवऊवऊयधधप्रंदितीयउऊदय
नगाऊवर्मववधप्रंरु नीयउऊदयधऊमत्रवहंगधप्रंरुथउऊदयन

१३

कलीनकयूरूकयावधलंयंमउऊदयधयनयुयाभधनंमरुमउऊदयधः
विगूवावुक्कमिवाधनं। मययक्कभननमिवामावाधमिधंयाधवर्मनिवाभनंः
५५वावरीरुसहास्यनोदरयानकंकनूधरुगंभानिनवनारुसमांविगं। वकिक्कु
लकधिवावककयूरनोवमिवामविऊऊयुवीरुगंरुभवतिः०खधुमूडामडिगो॥
वविमधुलंवामदक्षिणरारगयतिरुलवकालिवाविवामकधूकनरुगलथावाः

सं

लिद्यसतसंरु गवनें श्रीवकुसुमनं मात्मानं रावयतु ॥ रागवत वज्रवाजा ही वकः
वर्षमकटकं भागिननादि रांघनायवतु मष्टिगाकर्हि मवनां दिउजां वाम उजं नक
पूर्वकयात्रधनं ॥ दक्षिन उजं इष्ट गजनी वज्रकर्हि नयक मडा विउषिगं धवः
इधिनाननां जघा दयनरुग वनसमागुफानरागयनिः एवं उगा रुगवतिरावयत
॥ नगा पूर्वादि दाय पूर्वाकिनी लामा खडु गालनूयी नी कृष्ण मवक योने

१४

४॥ ॥ चकवकु वउ उजा ४ वामकयात्रवलांगंदक्षिरथ उमव कर्हिका उ
कु कलालवदनागिननामकटकं भायं च मडा विउषिगा ४ आलिद्यसतसिगा ४ विदिग्
लषू ॥ वाधिविर्मुग राधु कायालानि ॥ गदहियुथमविर्मुवर्क अशालं नी लं वजाव
लिविउषिगं ॥ पूर्वस्य दाययलिलमलयवधु कयालिनं पुचधुं ॥ उरु नजा नंधनः
महाकै कात्रवधुमहि ॥ यश्चिमआ कियानक कै कात्र पुतामति ॥ दक्षिरथ अंवदः

सं

विकट छिन्नमहासी ॥ आ (अ) रा (ग) ज (व) र्था (स) ना (व) नी (नं) ती (अ) म (नी) ॥ ने (म) र्थ (ना) म (स) र्थ (न)
अ (मि) ना (हं) र्थ (व) ला (वा) य (व) द (वी) का (ट) व (ज) रं (लं) कं (ध्व) नी ॥ ॐ गी (म) न्य (मा) न (व) व (ज) द (ह) र्म
रु (यां) ॥ ॥ ॐ नि (वि) र्ण (व) क ॥ ॥ दि (नि) य (वा) क (व) क ॥ अ (सं) नं (न) कं (न) क
य (भा) य (नि) स (मा) द (नं) ॥ न (स्य) पूर्व (दा) न (का) म (य) अं (क) ली (कं) न (वा) व (नि) ॥ उ (रु) ना (व) ज (ज) रि
लं (म) हा (हं) व (वी) ॥ य (श्चि) म (शि) ग (क) नो (म) हा (हं) ल (वं) वा (य) वा (गं) ॥ द (क्षि) र्थ (का) र्थ (ग) ना (यां) :

१ॐ

व (ज) रं (का) न (सू) ना (रु) क (यी) ॥ अ (स्य) यां (क) लिं (ग) सू (रु) ड (म्भा) मा (द) वी ॥ ने (म) र्थ (लं) या (क) व (ज) प (रु)
सू (रु) डां ॥ वा (य) यां (वी) य (त्र) म (हा) रं (व) र्थ (ह) य (क) र्ण ॥ ॐ गी (मि) ना (य) वि (न्या) द (व) ग (न) नां ॥
ॐ नि (वा) क (व) क ॥ ॥ रु (नि) य (का) य (व) क ॥ ॥ अ (स्य) नं (गु) कं (गु) कं (व) का (व) लि (अ)
लं (क) र्ण ॥ न (स्य) पूर्व (न) य (न) सू (र्या) म (हा) व (नं) व (क) व (गं) ॥ उं (रु) न (गु) य (द) व (गा) या (न) ल (व) ज (व) धुः
ना (हां) ॥ य (श्चि) म (मो) ना (श्च) ह (य) गो (वं) सो (धु) ली ॥ द (क्षि) र्थ (सू) व (र्ण) दी (यः) आ (का) म (ग) रं (व) क (व) मि

से

वि॥ अथ यो न गव श्री ह नृकं मवी नो॥ नेम सां सि र धो य न नृ त्थ श्रं म हा व नो॥ वा
य्यां म नो वे नो व नं व क व र्हि दी॥ ॐ न्म न्या कृ न द व नो यो व क स म हा वी र्थो॥ ३
ॐ नि का य व कं॥ ॥ स्व शु क या ला द या वी ला न क व क्का च रु रु जा वि न ग्रा क ट म
कृ टि नां॥ आ लिं ग न रु क द य व स व क व क य व दी नी य रु क द य न वा म य व लो गः
द क्षि ण उ म नृ कं य व म्म डा दि गु णा आ वि द स न र्हि ना ॥ ४ ॥ ए व द या द या न क व क्का

१३

दि रु जा आ लिं ग न क या ल र ह सा द क्षि न व क क र्हि ना वि न ग्रा नो ड नृ पी न्य ४ मू क क सा
अ द य था ग स मा य नो ४ दि गं व नो ४ यं व म्म डा वि रु पि ना॥ पूर्व दि द्यो न का का म्म कृ ष्णः
उ नृ का म्म म्म मा ला ना म्म नृ क गु क्का म्म पी ना॥ अ र्ग या दि ष य म दा नि कृ ष्ण पी ना
य म इ वि पी ग न क य म ड्डी न क म्म मा य म म र्थ ना म्म म कृ ष्ण॥ ५ ना ४ य पी न्य ४ न
क व क्का च रु रु जा वा म क या ल र व र्ही ग द क्षि न उ म नृ क र्हि का पु ला ली ट म दा स

सं

नानिवसनायं च मूढा मूढिना कया लवजा वलिवि श्रुतिना विनया सक कं
सा नोड नृपी ना लुति ॥ न ना काय वा किर्तु रदन पुष्ट कना विवि श्रुति न ॥ स्वर्ग
मत्य प्रया ना नैव क मूर्ति रव कथा न ॥ उँ आ ४ हँ सर्व वी न या गी नी काय वा क वि
रु व ऊ स्य रा वा स का हँ ॥ ॥ य व र्ण अंग ना स ॥ ॥ उँ ह ० न म ० जी सा
हा हँ वा य ट् द ह हँ हँ र्द र्द र्द हँ ॥ उँ वँ हाँ याँ जीँ माँ जँ जीँ हँ हँ र्द र्द र्द ॥ उँ या ग

११

भुक्ति सर्व धर्मा या ग शुद्धा हँ ॥ न न ४ समा नि न ह्य न च कं आ का स द स ट् द ॥ उँ ४ हँ वँ हाँ
४ ॥ आत्मान म धु ल्प ना कृ षा नि धाय ॥ उँ व ऊ शुद्धा सर्व धर्मा व ऊ शुद्धा र्द हँ ॥ न ना अ
रिष क ॥ अरिषि च्छु माँ ॥ उँ सर्व वी न या गी नी य था दि जा न मा उ द स ना पी ना सर्व न था
ग न सु हे था स ना य यि षा मि शु चं दि य न वा नि नां ॥ उँ आ हँ सर्व न था ग न अरिष क स
म श्र ये हँ ॥ म कृ ट् ॥ अरिष कं महा व ऊ उँ ध उँ क न म ह्य न ॥ य षा कं य ऊ ना र्थ य म



कृष्टयच्छकवाहवं॥ॐ वज्रधनस्य नीमरुषिचक्रं॥ॐ वज्रवज्रीनिमरुषिचक्रं॥
 ॐ वज्रवज्रीनिमरुषिचक्रं॥ॐ धर्मवज्रीनिमरुषिचक्रं॥ॐ कर्मवज्रीनिमरुषि
 चक्रं॥अथारुषिचक्रंमसि वज्रवज्रादिचक्रं॥ॐ दंतसर्ववज्रं गुरुवज्र
 ससिद्धय॥ वज्राधिपतिस्वामिनिमिषं॥निमिषवज्रसमयसंज्ञा ४॥वज्रधन
 अमृ४॥वज्रास्यमरुषिचक्रं॥वज्रास्यमरुषिचक्रं॥ॐ वज्रवज्रीनिमरुषिचक्रं॥

三

मनथमगग रुडुवस्व ॥ ॥ पूर्ववत् आर्वधयाद्यादिषु च न्याय ॥ ॥ यथा यथा
नयूजायाश्च द्यष्टावादनमुनि ॥ ॥ शीतकसम्बन्धसम्बन्धवत्तु जकवीनवी
लसनीयवलगथाधिनाज ॥ कालाननालडिनवा रू रू ग्वयगुडकान्धनिरुनमा
मिनवाधियमं ॥ ॥ मनुनर्थन ॥ ॥ रुनिमधुलादियागदिरिय ॥ ॥
नताञ्जलिकालिपकि ॥ ॥ यथायथा ॥ ॥ दक्षिनवायनानि

सं

॥ अथ जगत्त्रिविक्रुतस्य अनादि संसिद्धिश्चैव कस्य च वीजवद्विषयसमवसिद्धिर्गोचरा
नासायुगलनयविभक्ताद्योपनिविष्टतस्याकाशं च त्रिमयुलीरुताविचित्रं ॥ न कश्चित्पु
कुरुं कालवदुवीजयविद्यमंसहजसम्यग्भुक्त्वि उज्जैकमयं वज्रवज्रयष्टाध्वं ॥
आलीधसतसं आकासचिरसह संवज्रकया न धात्रीहि उज्जैकमयी वक्रवज्रवा
ही समायत्र विहाय ॥ तन्नामायासूत्रमध्वनि समाकृष्टं धाकासकं वक्रकमनल

१३

वयम् ॥ जगत्त्रिसमसासान्वसमसानानि समयवक्रसमयवक्रं काकासादिषु काकासा
दयः ॥ कायवक्रं कायवक्रं वाक्त्रवक्रं चिरं चक्रं चिरं चक्रं महासूत्रवक्रं महासूत्रवक्रं
संतागवक्रं संतागवक्रं हरावनामयवक्रं हरावनामयवक्रं नित्यविष्णुतावनीया नावसमसूत्रम
हावागडवायनगुवयनि धनं सिंहनामकमका हलद संहं कावं महासूत्रमय
तावयम् ॥ गुरु ॥ उकावउकावं हकाव हकावं मित्रसिगीवं अर्द्धवं अर्द्धवं

सं

विद्याविन्दनादनादंवागुंसकसहस्रलगाव्यंनिविकल्पंमहासखमयीविरुनित्रययन्।
यनःसत्यार्थमतीतिमधुलंमधिमय॥ ॥युर्वक्तृशकषधायुष्यंन्यासयक्कायहा
त्रयजादिलाभ्याद्यध्वावादनमुनितर्क्यद॥१००॥निगुक्तयाग४॥ ॥नतामन्त्रजाय
युर्वक्तृशकषधायुष्यंन्यासयक्कायहात्रयजालाभ्याद्यध्वावादनमुनितर्क्यन॥१००॥निजाय
जाग॥ ॥नतावल्लिमालरयंयकात्रधवायूमधुलायत्रिंजाताश्रुतिमधु

२०

लंश्रुजनिःमधुरुययत्रिकायमरुक्तंविदित्य॥नरुक्तकादियत्रियत्रिंःवैः
श्रुंजीवैरुंलांमांयांतांवंकात्रजागयक्कायमनयक्कायदियत्रयनमीथाद्य॥यवनम
धुलवत्रयत्रितकालिताश्रितायत्रिंलीनमानाकनादिकंश्रुतिनवर्धुतानूडवत्र
यंदृष्टा॥नश्यत्रिंकात्रानितवितस्मिमाकानकालिता१००॥मन्त्रामन्त्रमयशुक्रव
द्यमन्त्रद्यायीत्रीधंयात्रमहंमन्त्रिप्रयंसीगीरुंविदित्य॥नश्यत्रिःॐश्रु४

न त वा ह न य णी व ज्ञा वा र्थ य वा ध नं लि षा यि ता ॥ ॥ दा न य ति ऊ ज्ज मा न न य न
म द न स्त व न य ना नि म हा न ग न न ह म धु न मा हा य हा न सा नि य न स्था नः व स धि न
सा क ति कूः व द्द वि न सिं या न ध य क्क वा स्यं वि या श ल भु र ॥ ॥ ल य क दा व
ना सिः शु धं वा शु धं वा स म दा व ना सिः शु रं रू या न् ॥ मं ग नं रु वं तु स र्व दा का म
शु रं ॥

५३

श्री
आर्जु

ॐ नमः श्रीनक ऊटि आ
रुद्रक वभ ॥ नाना धनु
ता की रघू ॥ नाना यं किनि
का रे ॥ नाना मृ ग समा क
समन्तादधिवासिनं ॥ ना



र्यतात्रये ॥ श्रीमन्
विद्याजिग ॥ नाना ऊ मल
कूर्जिन ॥ नाना निर्ममं
ल ॥ नाना कृ सु मजा किहि
ना रुद्र रुलायनः स्वद

२५

नात्रा

यदागिननि स्वये ॥ किन्नवे मधुवाजी मे मरुवा दध संकले ॥ सिद्धि विद्याध वगले
गन्धर्वश्च निनादिने ॥ मन्त्रिहि वं न नारगेशः मरुतं ससनि सवित ॥ वाधिसत्वगले
शान्तेदमरु मिधवे ययि ॥ आर्यतात्रादि हिर्दये विद्यात्राऊ सरु सुके ॥ ऊटनाऊ
गले शान्तेः रुद्रयी वादि हिर्दने ॥ सर्वसुखदितायकाः रुद्रवान् वला किन ॥
विजु रुद्रनन ॥ श्रीमान् यमगर्ह सनसि ॥ मरुता नय सोयकाः मेत्याः

आर्य

श्री

मानिः सत्यानन्तामहं सदा ॥ तावयिष्यामहं सत्याः नानाहयमहान्वा नाना नन ताव
निमांलाकः गायंति मन्त्रियंगवा ॥ कृताञ्जलियथाहृत्वाः नन सादवसाः सात ॥
कलंतिक नत्रिकृष्टाः ॐ देववनमववीरु ॥ नामाष्टम नकं उहीयहृत्वा कीर्तिर
ऊने ॥ दमरुमिस्वने नाथे वाचि सत्वेर्महर्द्धिके ॥ सर्वयाय हनंयध्वः मार्ग
लं कीर्तिवर्द्धिः धनधान्यकनंसेवः आयवात्रायवर्द्धनं ॥ आयवात्रायजननः

२७

ताव

सर्वसत्यसत्वावहं ॥ लम्बी श्री सायकं वेव सर्वसत्यविवर्द्धनं ॥ भेये मावं वा सत्वा
नाः नलीरुयमहामन ॥ नवंमकं रुगवान् पदसंनवलाकिरु ॥ वावलाकदि
म ॥ सर्वाभेशासुवधया दगा ॥ दक्षिणकनमहस्यः पन्यवद्धमहि रं ॥ नमवा
वमहायाह ॥ साधसाधमहाकथ ॥ नामान्गधमहाकागः सर्वसत्येकवसव ॥ या
निसंकीर्त्यमनजा ॥ सम्यकसूधनस्ववा ॥ सर्वयाविविनिर्मका ॥ सर्वस्वय

आर्य

श्री

गुणविनाऽकालमरुनिदशाः शुभायानि सुखावति ॥ कामदं संपवदमि
 : देवसंघाऽष्टमऽमुम ॥ अनूभादधर्मनद्वारविषयधंसनिर्वृता ॥
 ॐ लावनसुलावनगानगावाहवसर्वसुखानकंयिनिः सर्वसुखः
 त्रिभिः सह सुगुणः सह सुभग ॥ अं नभाहगवतः अवलाकय २
 मां सर्वसुखानां ॥ ॐ नभाहगवतः अवलाकय ॥ ॐ स

२०

नारा

इविषुऽसुगतात्मजः मेरिद्वयनिर्मल ॥ सामस्यामनूयीमहा
 याऽप्यवतलरुविनः अपवाजिनामहाबोदीविषयमहावला ॥
 ॐ सगीऽनद्यथा ॥ ॐ कल्यानिमहागजाः लाकवाणिमहायसा ॥ सन
 स्वतिविमावाक्षिपुऽशीयुष्टिवर्धनि ॥ धतिदापुष्टिदासाहा ॥ ॐ का
 नाकामयिनिः सर्वसुखदित्ययुक्त ॥ संग्रामासावधीजया ॥ यस्या

जुर्ज

श्री

रमितादवीश्रार्थगायामनाममा ४॥ इंदरिसखीनियर्धविद्यानाहियिर्वद
॥ वदनामदाखोत्रीश्रजिगायितवासया ॥ मदामाया मदाखगामदावत्रयवा
कमा ॥ मदाबोदिमदावद्युःद्वसखनिगूदनी ॥ यसाकाभाकनूपाधविजयाद
लनयताविद्यतात्रीधजीवत्रीवकीवाययथाऊमृनिगमृनिकालिकालवायी
निगावत्री ॥ वदधीमाहीधीभाकाकानिडामिनीयुता ॥ वासुधीवदमगावः

२६

ताश

गुक्तगुक्तवासिनि ॥ माशल्यांभां वत्रीसोम्याजाकवदामनाऊवा ॥ कायात्रिधीम
हावगाः संधासखायवाजिता ॥ सार्थवाहकृपावष्टिः नदुमार्गपुदर्भनी ॥ वद
सासनीसासुसुत्रयामिनविक्रमा ॥ भवत्रियागिनिसिद्धाः चंधुत्रिअमनाकु
वा ॥ धन्यायुधमदातागाः गुरुगायियदर्भनी ॥ कृगानकगसिनीहिमाः उगाउग
मदानया ॥ ऊगदेकहितायकः भवध्वरुकिवत्सना ॥ वागीधत्रीगिवागुका

आर्जु
नी

निष्ठा सर्वत्र मानसा ॥ सर्वार्थसाधनी रुद्राः ॥ राघो वीर्यवती ॥ अरुणा रणे
रुमिपुष्पाः ॥ श्रीमला केशवात्मजः ॥ नाना नामगुणाननाः ॥ सर्वसायविपरीति
॥ अं नालकया वलं विनिष्कृतं वनीयसाह ॥ नामाकारुण्यगणकं ॥ अंकुश
रुं गंधिवान् नृप रुस्य मरुतं ॥ गुह्यं दवानामपि इह ॥ सोलुगधः ॥ रागाक
वधः ॥ सर्वकिल्बिषधामर्षं ॥ सर्ववाविपुषमनं सर्वसत्यसुखावहं ॥ शिकार्लय

२२

ता २

यत् ॥ दीमानः ॥ विश्वानसमाहितः ॥ ॥ अथ ननेवका ननः ॥ नक्षत्रीयमवाप्रया
॥ इति कस्याः ॥ सुखिनिर्गुद निडाधनवान् ॥ रुवर्गः ॥ अरुवर्गः ॥ महायाः समवा
वयनसंभयर्गः ॥ वधनात्मा कं वधववेहान् ॥ अरुवर्गः ॥ मगुवामिगुताया
कि ॥ गीनः ॥ पिडंष्टिनः ॥ संभमसंकटदूरं ॥ नाना रुय समष्टिः ॥ समवध
दवनामानिः ॥ सर्वरुयान्याहनि ॥ नाकात्रसर्पं ॥ वकिः ॥ प्राप्रागिविपुलांभयः ॥

आर्य
श्री

गुरुद्वयिकायां नामाश्च न स नं वृद्धादिव नं समार्यं ४॥
यधमावृत्त्यादि सुर् ॥

२२

॥

२१
तारा

ॐ नमो गुरुवणे आर्यश्रीव
श्रीः सोम्यनयिव न्यदाः वसु
वराः धलदीवा नवीः नौ वंस
मितादवीः यस्तु श्रीवर्द्धवर्द्धनी
सर्वगुमाहृताः नमो नीता ल



सुखात्राये ॥ दिव्य नयी सुनीय
नीवसुखा नीवः वसुनी नीक नि
नथा तकि वसुनाः यस्तु याय
ः वी याव नीगिवा शुद्धाः नामु
दीदवी ४ वी यादा नधन धनी

जादि न

रुषिगारुतमाता शुभसर्वरुलधर विधीः इदीक शगधी शरिमा डग डग यवाकमाः
दावै नया वमिता दवीः वर्यधी दिव्य वयीधीः निवानी सर्वसी रान्याः कुरुल श्री र्यसगु
ताः दहतिमालीधी वचीः सववी सर्वगु मारुगा गकृता नगानि बोदीः कोमा नी विग्व
वयीधीः विर्यया वसी ता दवीः जगदान नमः वनीः गायसि डग वयाशः अदि सिद्धि वलः
यदा ४ दान यध्यम हा गौ गो ४ अजिता जिह विकामाः ऊदे रौ के क हि ता वी याः सगु

३२
निमा

मारु वगी गुताः कानि यालमी ता दवीः गीलधी ध्यान आयधीः यर्मधी यर्मधी निशुगः
यर्ममासनमासनीः शुद्ध वयी महाग जाहमवर्क यरा कवीः विनामधी वनी दवीः यस्त
यस्त कवा वधीः नीवानी कटमा वृष्टः धन्या रालधनयीयाः गेवागुक महगादिः विद्यारुत
धर वीधीः मातनी सर्वदहानीः वलवार्ग र्वव र्वनीः गन्यता ता वीधी दवीः तावारा
वविवर्जनीः वेचयकि विचयता शुः दिर्यिनी कुमद्वनीः रुदनि सर्वमालानीः सफयाता

आदि त

लकारवतिः वर्मवीवदमाताश्रुशुल्लाराशुवागिनीः सलखनिविसागदीः वदुवर्मवि
हारीतिः ताथागतिमहाप्रम्यावजीवीधर्मवानीवीः कर्मधर्मध्वनीविद्याः विस्वकावा
कुमधुलिः वाविसवमहासलवार्धं राकुतमखलीः वाचागधिमकिरीयत्राजदयादयरा
विनीः सर्वाथसाधनीजदाः सिद्ध्यामिहविक्रमाः दर्मनीवर्द्धमायनीः नष्टमाग्यायद
मनीः वागिग्वथामहासासुः रसाधिकारीवर्नददाः श्रीनयावागधीसिद्ध्यागिनीयागम

३३
जिमा

ध्वनीः मनाह्वीमहाकाकिः सोताग्ययीयदर्मनीः सथवाहकृयावृद्धिः सर्वनाथागतात्म
किन्तु॥ नमस्तुतमहादवीसर्वसत्ताथदायनीः नमः सुदिव्यनयीध्वः वसन्तानामासुतः
अस्मरुर्धर्मनामसुकालयैर्यथदिमाः यात्रागिनियतंसिद्धिः श्रीगीगार्थमनाजथा
न॥ यदस्मर्तुकनयार्थः आनन्दार्थसदावर्धः नस्तर्वक्ययथासः सम्प्रदानामहदकः अथ
वागीलर्ग्यनाः सयज्जागिसावाहवतः प्रियश्चदयवाक्चः नयवालीयदर्मधीः विष

धम

शुणीयकलमः अदयमयजायनः शानकहमीवत्रायाकाः यश्रायाकसखावनि४॥४
॥ -६३३> ॥ आर्यशीवसखावानामलेभुं नमनकैवद्वरायिर्नसमाय ॥ -६३३> ॥
१३ नमारावले आर्यवज्रविदात्रये ॥ नमावज्ञाय ॥ नर्वमयाकनमकसिन्म
मयरागवानः वज्रविविहन्ति ॥ सर्वशनीर्न वज्रमयः मविद्यायवज्रयाधिभव
ज्ञानरावनः वज्रसमाधिसमायत्रः नमावज्रयाधिः वज्ञानरावनसर्ववज्ञाविहन्ति

३३
दा ३३

वोमहाकावसंरुर्नः वज्रसात्रयर्दरायनमा ॥ अद्विचयमत्ययः सयददद्विर्नर्वाः
सर्वगयराजिर्नः सर्वसत्त्वविदायनर्कः सर्वसत्त्वासादनकर्त्रं ॥ सर्वविद्यायुदनकर्त्रं ॥
सर्वविद्यासुसुनकर्त्रं ॥ सर्वकर्माविधिसनकर्त्रं ॥ सर्वकर्माविदायनकर्त्रं ॥ सर्वशहाः
सादनकर्त्रं ॥ सर्वगुरुविभाकधकर्त्रं ॥ सर्वरुनयकर्त्रं ॥ सर्वविद्यासुसुनकर्त्रं ॥
कवीः असिहानीसिहकवायिसिहकवीः असिहानीसिहकवायिनासनकर्त्रं ॥ सर्वक

ॐ म

सयदः सर्वसत्त्वानां बद्धकैः शान्तिकैः यद्विकैः सर्वसत्त्वानां सुमनकवैः सर्वसत्त्वानां
हनकवैः ॐ मा मरु मरु वरुः सर्ववद्वानुतावायः यद्वृत्तावजयाधी ४ यत्तावकानमा
बलकयाय ॥ नमा ४ वद्वद्वजयानयः मरुयद्वसनायकय ॥ न यथा ॥ डं कुरु २ ताकय २
सुटय २ यनायय २ सर्वसत्त्वानां वावय २ सैवावय २ ववय २ विववय २ गुम २ सक
मय २ सर्ववद्ववाविनिः कट २ सैकटय २ सर्वमरुनः यट २ संयट २ सर्वविद्यावज २

३ ॐ
दा ॐ

सुटवज २ कट ॥ वज २ मट ॥ वज २ यथा वज २ रुथा वज २ रुथमैरुनी सुवजायसाहा ॥ डं
रुलीधी २ रुक २ रुमिनि २ वल २ वल २ कल २ वज विजयायसाहा ॥ डं वज किलिकि
नायसाहा ॥ डं कट २ मट २ यट २ माट नयमाटनायसाहा ॥ डं वल २ विवल २ रुसल २ मालय
२ वज विदय २ यसाहा ॥ डं वद्व २ रुद्व २ महा किलिकिलायसाहा ॥ डं वद्व २ महाकावः
किलिकिलायसाहा ॥ डं वल २ वधुलिकिलिकिलायसाहा ॥ डं गमय २ वज किलिकि

४५ म

लायसाहा॥डंनश्चकधनायसाहा॥डंवजयहलश्चकयर्क॥रुनायसाहा॥डंमणिः
मिलवज॥धुनिलिलवज॥यनिलिलवज॥महावज॥अयनिलिलवज॥अमायवज॥न
कहिवज॥संघजायसाहा॥डंवश्चिनिश्चश्चरुंरुट॥डंनमावतुगयायःनमः
समकुवदानी॥डंमहावलकनवमनवःअवलमधुलमायःअतिवजःमहावत्रिम
लधयजिन॥कलरुटिडिडिडि॥नलदरुश्चवदजुतजवनि॥निलिश्चश्चश्चमहाव

३७
दाज

का॥महावत्रवज॥वजीकुसुलायसाहा॥नमावतुगयायानमावधुवजयाधयःमहाय
रुसनायगया॥तयथा॥डंनश्चकधनायसाहा॥डंवजयहलश्चकयर्क॥रुनायसाहा॥डंमणिः
मिलवज॥धुनिलिलवज॥यनिलिलवज॥महावज॥अयनिलिलवज॥अमायवज॥न
कहिवज॥संघजायसाहा॥डंवश्चिनिश्चश्चरुंरुट॥डंनमावतुगयायःनमः
समकुवदानी॥डंमहावलकनवमनवःअवलमधुलमायःअतिवजःमहावत्रिम
लधयजिन॥कलरुटिडिडिडि॥नलदरुश्चवदजुतजवनि॥निलिश्चश्चश्चमहाव

वृध

हयकुदीर्घायस्कृतां। मयादायनि। अथबल्लार्यावलाकिनेभवावाविसत्वमदा
सत्वाऽल्लयीसनायकीयाकुलीजलियगाहल्लाः। रुगवक्तमरुदवायवृ॥ दसयनुतगा
वनः। सर्वतथागताष्ट्रविजयानामध्वधीः। दधयनुसगाता। अर्थबल्लार्यावान्॥
सर्ववक्तियर्थमदुलः। मवलाकासमन्तावलाकिनेधीनामसमाधि॥ समायनयिमां
सर्वतथागताष्ट्रविजयानामध्वधीतास्वगसम॥ इदंभाहगवर्गेसर्वगैलाययनि

विसिनायवृद्धायनमः॥ तथथा॥ ६॥ वयश्चिरि॥ धयश्चसमसमन्तावलासत्त्व
नगतिः। गगधसातावविशुद्ध॥ इदंष्ट्रविजयययविशुद्धः। अतिविशुद्धमां। सर्वतथा
गता॥ सुगतवलवचनाः। मृतातिशयकेमहामुद्रामनुयद॥ इदंआह्वयश्चायसंवा
धीः। ६॥ वयश्चिरि॥ वयश्चगगधसातावविशुद्धयश्चष्ट्रविजयययविशुद्ध
॥ सहस्रलसीसंवादिनं सर्वतथागतावलाकिनः। यद्यालमिनायविशुद्धीसर्व

वध

विद्यानाविधिर्न॥ ॐ मूढमहामूढः महामूढा मनुयदेखाहा ॥ ॐ येसाकलपुत्रसर्व
नथागाष्टीयविजयनामवालेधीमहा मरुदधुमीवागीधीयगीरामयनासनीः लि
विताश्रुतययवाः अययवानेयवाः कविद्विष्टमधुकुमागृहससुयः मधुः
लयजीकृत्वामूडागीयजीकृष्टः यदकिनीसहसंकर्तव्यः ऊथाविहवान्नयतः ॥ स्व
धुयदनामलिबिन्वाः धर्मधु वेगर्हसिष्टयाः सययधर्मधुवादनवा ॥ आनयम

४२
लाया

क्रा ३

लिंकयाकात्रयित्वा। सकेकविंशतिः वरुवत्वालिंशतवागी सहसंवासंयुयीरु
यताकायर्थधयदीयरावनेययादिकैः सर्वयजाति। यजयतः ॐ मीसर्वतथागताष्टी
यविजयानामवालेधीः वाययतः अकड्वीकतेः वेष्टमममावयत। असेवकृतरय
विमितायवनाहविष्ठाति॥ दानेदानवीसकदिनायः सकसासायः यथागामिष्टीति
॥ सकसासायसकवर्षाधीः किवति॥ सकवर्षाधीसकवर्षायकिवति॥ सुनिवह

२५

विष्णुदस्यानाममहताहिकुसंघनाः साहं कथादहाहिकुसंघनाः ॥ सर्वदेवमहाधामक
वाधिमस्वेमसत्वे ॥ नृगुणनृगदाहिकुसामनृयनसा ॥ अहिकुसामावधीनामः
दवतायाः सामयवदमसामः यलताश्चगदकि ॥ सानदध्वनः नृगुणनः नयध्वनः ननि
नध्वनः नमस्वनः नमश्चनः नमध्वनः नदध्वनः नदध्वनः नमश्चनः नमध्वनः नमध्वनः
यिगस्याहिकुसामावधीनामदवतायाः नामजानाति ॥ सायिनदध्वनः नृगुणनः न

निवध्वनः नमस्वनः नृगुणनः नदध्वनः नमध्वनः नदध्वनः नमध्वनः नमध्वनः नमध्वनः
॥ साहं हिकुसामावधीनामदवतायाः नामजानाति ॥ अहं मयि ॥ नदध्वनः नदध्वनः नदध्वनः
नमध्वनः नमध्वनः नमध्वनः नमध्वनः नमध्वनः नमध्वनः नमध्वनः नमध्वनः नमध्वनः
यदानिहगवति ॥ नयथा ॥ उं यत्राकमसि ॥ उदयमसि ॥ विलमसि ॥ अर्कमसि ॥ मर्क
मसि ॥ उलमसि ॥ गुलमसि ॥ विवलमसि ॥ महाविवलमसि ॥ अकवानमसि ॥ स्वाहा ॥

सूक्त

ॐ अथ वा किं ता मा ग्री विना म द व तां यां ॥ य र्थं मां र्गा य या ड य मां र्गा य या वा ऊ क ल ताः
मां र्गा य या ध ऊ न य द तां मां र्गा य या ह स्ति तां मां र्गा य या स्वी ल क य मां र्गा य या अ ग्नि क
य मां र्गा य या उ क र य मां र्गा य या स र्व ष ष थि कः य त्प मि क र य मां र्गा य या आ क ल ष
अ ना क ल ष । म र्दि ग ष । अ म र्दि ग ष । सिं ह का म व रु । या य ता म व रु । स र्प का म व रुः
म र्व का म व रु ॥ ग य था ॥ ॐ अ ला ता ला म द ला स त्वा । म र्दि गि ल रु २ मां स या ग्री वा

४३
यसं

नाः स र्व स त्वा नां व स र्व क र्थ यि द वा व त्प स्वा दा ॥ न मा व ल क या या ॥ ॐ न मा र्गा व त्प आ य
मा ग्री वि द व ता यै ॥ ग य था ॥ ॐ व र्णा वि व ला लीः व रा ह म वि स र्व इ ष्ट य इ ष्ट नां व रु म
खं व द्ध २ स्वा दा ॥ ॐ मा ग्री वि स्वा दा ॥ ॐ व न व व र्णा वी व द ग्री २ व ला ली व ला ह म वि स र्व
इ ष्ट य इ ष्ट नां व । व रु म र्व व द्ध २ स्वा दा ॥ ॐ ॥ आ र्थ मा ग्री वि ना म द व दी स मा फ
॥ ॐ न मा र्गा व त्प आ र्थ ग र्हा मा र्हा का यै ॥ न वं म या डु त म क सि न म य र्गा वा न् ॥ अ द क

शनि ३

वयो महानरायाः मन्त्रकदवनागयकः गवर्धसदगद उकि नममहावरा यस्मात्ताः
दिसासां गावद्वद्वद्वस्यगिहुक दानिध्वनारु कहुतिलेष्टा विंहागिगि। नद्वका।
दतिगुर्था मात्रामहावज समयालंका लाविष्मनाधिष्ठितासिंहासनतः विद्वयगिस्म।
अनकवाधिसत्त्वमरुसहलो कयथा। वजया विनयनामवाधिसत्त्वमहासत्त्वन। व
जया धनयनामवाधिसत्त्वमहासत्त्वन। वजसन्नयनामवाधिसत्त्वमहासत्त्वनः

४ वं
व मा

वजवायद्वद्वद्वनामवाधिसत्त्वमहासत्त्वन। वजविक्रमनयनामवाधिसत्त्वमहाः
सत्त्वन। वमहासत्त्वन। वजालकालनयनामवाधिसत्त्वमहासत्त्वन। जागिद्वज्जनयनाम
वाधिसत्त्वमहासत्त्वन। अवलाकिरं ग्वनामवाधिसत्त्वमहासत्त्वन। समका
वलाकिरं ग्वनामवाधिसत्त्वमहासत्त्वन। यर्भकं दुनयनामवाधिसत्त्वम
हासत्त्वन। लोकधीयानैयं वनामवाधिसत्त्वमहासत्त्वन। विकसितवक्त्रं नवा। मम

मनि ३

विदुः यकि स्म ॥ कर्षी चिदु दया मय ह वनि ॥ कं वा चिदु या ध मय ह वनि स्म ॥ कर्षी चि
 न्दी या य सत्त्वानां मल्याय ४ कर्षी स्म ॥ नदं सत्त्वानां ० मय दय न वा ह यनि ॥ स्म ॥ तर्षी यनु
 रग वना द ० ॥ धर्म ययार्थः यन सर्व सत्त्वानां ॥ सर्व यद यथा न चां विंते यनि ॥ रग वना द
 माध माध व ऊ याधीः यत्वं सर्व सत्त्वानां ॥ मथा य हि नाय सय यो ध क या चिदु मल्याय ॥ मदाय
 फा नि गुप्ता न नं ॥ न था ग न य प्रिय र मि ॥ न न रू ध य सा धू व ॥ न रू ध ॥ मन सि क ल ना वि धं

22

४३३

इह नैव हाथाः मय न्यानां मत्तिका लानि शिथिलानां गुणानि गुणक कर्म दित्या यजाम
 यन्त्राः जायन्त्राः धयन्त्राः यथानकर्मवर्ग दनः सर्वेषां यथा गुणानि । कर्तुं हाथा यजिनाय
 कियं कर्तुं । निदस्तां ऊसानिगाः दवाश्चास्यारथेव किन्नारथेव सान्वाशा यथा यथा
 दवाश्चास्यारथेवः यदनाथेव सर्वसः समयनिकृत्वायाः महाक नग्नक ऊसा यजाम कर्म यथा
 कामिः मडा वायि यथा कर्म ॥ ० ॥ अथ यत्नं गवान्माका मनिस्तथा गवा ॥

मानव

श्रीगुणार्णवमहाकव्यमलध्वजं ४ सिद्धलवर्धनसुमनः ॥ गङ्गासालिदादिविद्यहं ॥ ॥ ॐ नमो ॥
 लोकाय आदिष्टाय नमः ४ स्वाहा ॥ यवदल ॥ ॐ वदामस्तु विक्रमाय श्रीगोपवनमः ४ स्वाहा ४ ॥
 अग्निदल ॥ ॐ वक्रांगकृष्णाय नमः ४ स्वाहा ॥ दक्षिणदल ॥ ॐ गङ्गाय नमः ४ स्वाहा ४ ॥
 ध्वजय नमः ४ स्वाहा ॥ नैऋत्यदल ॥ ॐ लाहितावर्धनीयमाय नमः ४ स्वाहा ४ ॥
 यशिमदल ॥ ॐ अस्तारुमाय नमः ४ स्वाहा ॥ वायव्यदल ॥ ॐ रुद्राय नमः ४ स्वाहा ४ ॥

७७

४३३

धृतिशानि श्रुताय नमः ४ स्वाहा ॥ उरुलदल ॥ उं हिना जन सन्निता यमरु ययाय नमः
४ स्वाहा ॥ ग्राहव नमः ४ स्वाहा ॥ ॐ शानदल ॥ उं धमांरु सन्निता यज्जानिकं नवनमः ४
होस्यो ॥ ॥ मधुल यवदाल वक्षारगवान ॥ दक्षि धद्य नवज याधि ॥ यधि
मद्य नलाकनाथ ॥ उरुलद्य नमंरुधीक मा ॥ यवोरु नका नाः सर्वगदा ॥ यवदक्षि
धकारद्य सर्वनक्षगा ॥ दक्षि धयधि मकारद्य मसर्व यदवानां ॥ यधि मारुल कारद्यः

मनि ३

याधीश्वरानां यजामस्तु नाह दयानिः यथिगसिद्धाधीः यथा नृकमवर्धुह दनः गं
धमधुलं कंकुत्वाः गममत्सयकनकवयादितो जन अशंदत्वा नृणां अशरु वध गंवा
वासन के क मस्तु ऊय नृणां यथा य नव ऊ याधीश्वर माह का नाम धात्रीधीः सक वावा
नवा वयि क या निः ४ सर्वग सा आदि दयाः वक्रां वल दगु किं क लि क्ति ॥ यथि
दश सा सा वयि किं गमा य दीर्घ यि कं क नी य नि ॥ यथि खल य नव ऊ या धि ति क्ति ना ति

ज ३
धमा

कृतीनाः मया सकाया छिकानां वः अन ध सत्वा यानियाः यथा क र्क य न नि य ति य ति ॥ गयी
मकाल मरु ना काल यि य नि ॥ ॥ यथि खल य नव ऊ या धि ति क्ति ना ति ॥ यथि
यजु यि त्वा दि न दि नः व व यि य नि ॥ त म्मा ध र्मा तान क स्यः सर्वग सा सर्व भि ना सर्व सा य वि य व
यि नि ॥ तत् क्त्वा द यि द गी र्दं ना स यि य नि ॥ ॥ अथ खल ग्मा क म नि स्रु था ग मा ४ य न व यि व रु
माह का नाम धात्रीधीः व गं सा ॥ न मा व रु य ॥ न मा ध र्मा यः न मः ४ संधा य ॥ ॥ न मा व रु य

१३ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
सत्यं त्वं ॥ ४ ॥ अतः मया कृतं भक्त
हृदयं तस्मात् ॥ ५ ॥ अतः वदतः कृपया
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
सत्यं त्वं ॥ ७ ॥ अतः मया कृतं भक्त



नमः॥ ॐ नमः॥ सर्ववन्द्यं वाचि
 स्मिन्मयं रुग्णान् नृणां वर्यान् वि
 धिद्युः स्यान्नाममहतातिरुसंघ
 ॥ सर्ववन्द्यं वाचि सर्वमहा
 धीयं कुमालरुतामामनुयतं

समस्त अस्ति मरुधी उय विद्यायां दिमि जय विमित यु धा संव या न म ला क धा सं जय विमिता य ल
न स वि नि वि त तं आ वा जा य त थ ग ता य ह न सं म्य कं व द ४ वि द्या च व न सं प त्र ४ स ग ता वा क वि
द न रू २४ य २ व उ म्य सा २ थि ४ सा सा द वा नं च म न य्या नां च व क्षा त ग वा न ॥ ७ त दि ति वृ ति वि
य त जा य य कि स ल्पानां च ध र्म द स य कि स ॥ ४ द मं रू धी क माल ह त ४० यं जं व दी य का म न य्या नां
द ज ल्प य य व र्ष स ता य त वि य कि ॥ त थां व रू न का व म व ना नि दि द्या नि ॥ य व य ल य न मं रू धी म

[illegible]

अथ विवर्धयिष्यन्ति ॥ ययनययिन्ति नाययनसाययिमिताययसुधागतस्यायुक्तं
 वाहिं ॥ अथ किलिषाययिष्यन्ति ॥ तथामिमं गुणं संसाधयति विषयि ॥ ॥ तथथा ॥
 उं नमो गवतं अथ विमितायुक्तं नमो विमिति ॥ तं आनाययतथागतायार्हे नमो संस्यं वं
 य ॥ ॥ तथथा ॥ ॥ इयं ध्वजमहायुधं अथ विमितायुधं अथ विमितायुधं अथ विमितायुधं
 यितं ॥ उं सर्वसंसाधयति ॥ इयं ध्वजमहायुधं अथ विमितायुधं अथ विमितायुधं अथ विमितायुधं

॥

मिहगुनसंख्या ॐ लोकधातुगमिथानि ॥ ॥ ॐ नमो भगवते अथ विमिताय नमः ॥
 त. तं आवा जायतथा गताया हन संस्य संव दाय ॥ ॥ तद्यथा ॥ ॐ यं नमः सायं नमः अथ विमिताय नमः ॥
 अथ विमिताय यं नमः संता वायश्चित् ॥ ॥ ॐ सर्वसंस्कारयश्चित् ॥ ॐ धर्मगगनसमगगनस्य ता
 वविधुधमहानययविवाहसाहा ॥ ॥ तनयनयनसमयनवनवतिनां वचकाटीनां वचकमन
 नैक स्वदन ॐ दसयविमिताय ४ संतायितं ॥ ॥ ॐ नमो भगवते अथ विमिताय नमः ॥

गविनिविद. गंजा बाजा. यतथा गताया हेतु. सम्यक् वक्ष्यते ॥ गयथा ॥ ॥ उं यध्य २ म
 हायध्य. अयत्रिमित यध्य. अयत्रिमिता यध्य. न संता बायश्चितं ॥ ॥ उं सर्वसस्का २
 यत्रिष्टु च धर्मगतगगनसमर्गत स्वतावविष्टु च महानययत्रिता वस्सादा ॥ ॥ गं न
 रलयनः समयनसकती नां वक्षकाटी नामक मननेक श्वन नन्दमयत्रिमिता यस्सुं ता
 यितं ॥ ॥ उं न मातृगवत अयत्रिमिता यस्सुं न सुविनिविद. गंजा बाजा. यतथा गताया हेतु

न संम्यक् वक्ष्यते ॥ गयथा ॥ ॥ उं यध्य २ म हायध्य. अयत्रिमित यध्य. अयत्रिमिता यध्य
 ध्यगधन संता बायश्चितं ॥ ॥ उं सर्वसस्का २ यत्रिष्टु च धर्मगतगगनसमर्गत स्वतावविष्टु
 च महानययत्रिता वस्सादा ॥ ॥ गं न रलयन समयन यस्सुं वक्षि नां वक्षकाटी नाम
 क मननेक श्वन नन्दमयत्रिमिता यस्सुं ता यितं ॥ ॥ उं न मातृगवत अयत्रिमि
 ता यस्सुं न सुविनिविद. गंजा बाजा. यतथा गताया हेतु. सम्यक् वक्ष्यते ॥ गयथा ॥ ॥

ॐ यद्ध २ महायद्ध अयन्निमित्त यद्ध अयन्निमित्त ययद्ध लून संता वायश्चित्तं ॥ ॐ सर्व
 सस्कात्रयविष्टुद्ध धर्मत गगन समर्गक स्वतावविष्टुद्ध महा नययन्निवात्र स्वाहा ॥
 तनयव नयन समयनयं वसती नां वद्ध काटीना मक मननेक स्वन्न नः ॐ दं मयन्निमित्त सुगंता
 चित्तं ॥ ॐ नमो गवत अयन्निमित्त यलून सविनिचित्तं न आवा जाय न था गता यादं
 न संम कं वद्धाय ॥ नयथा ॥ ॐ यद्ध २ महायद्ध अयन्निमित्त यद्ध अयन्निमित्त

ययद्ध लून संता वायश्चित्तं ॥ ॐ सर्व सस्कात्रयविष्टुद्ध धर्मत गगन समर्गक स्वताववि
 ष्टुद्ध महा नययन्निवात्र स्वाहा ॥ तनयव नयन ४ समयन वल्लिं सती नां वद्ध काटीनां
 मक मननेक स्वन्न नः ॐ दं मयन्निमित्त य सुगता चित्तं ॥ ॐ नमो गवत अयन्निमित्त
 यलून सविनिचित्तं न आवा जाय न था गता यादं न संम कं वद्धाय ॥ नयथा ॥
 ॐ यद्ध २ महायद्ध अयन्निमित्त यद्ध अयन्निमित्त ययद्ध लून संता वायश्चित्तं ॥ ॐ

सर्वसंस्कारयविष्ठुद्धर्मगतगगनसमर्गतस्वरावविष्ठुद्धमहानययत्रितामसादा ॥
 ननखनयन-समयन-यवृष्टिसंतीनां-वृद्धकाटीना-भक्तमननैकस्वयन-ॐदमयत्रिमिताय
 सुकृतयितं ॥ ॥ उं नमो रागवत अयत्रिमितायज्ञानसुविनिश्चित-तं कृत्वा ज्ञाय-तथागता
 यादृक् संसृजं वदन् ॥ ॥ तद्यथा ॥ ॥ उं यद्यश्मदायद्यश्मयत्रिमितायद्यश्मयत्रिः
 मितायद्यश्मज्ञानसंज्ञाययितं ॥ ॥ उं सर्वसंस्कारयविष्ठुद्धर्मगतगगनसमर्गतस्व

रावविष्ठुद्धमहानययत्रितामसादा ॥ ॥ ननखनयन-समयन-वृद्धवृष्टिसंतीनां-वृद्ध
 काटीना-भक्तमननैकस्वयन-ॐदमयत्रिमितायसुकृतयितं ॥ ॥ उं नमो रागवत अयत्रिः
 मितायज्ञानसुविनिश्चित-तं कृत्वा ज्ञाय-तथागतायादृक् संसृजं वदन् ॥ ॥ तद्यथा ॥
 उं यद्यश्मदायद्यश्मयत्रिमितायद्यश्मयत्रिमितायद्यश्मज्ञानसंज्ञाययितं ॥ ॥ उं सर्वसं
 स्कारयविष्ठुद्धर्मगतगगनसमर्गतस्वरावविष्ठुद्धमहानययत्रितामसादा ॥ ॥ ननख

लयनः समयनः यच्छ्रुतिसतीनां वृद्धकाटीनां मकमननेकस्वन्नन। ॐ दमयत्रिमितायमं सं
 धितं॥ ॥ ॐ नमो गुरुवत जयत्रिमितायस्त्रुनसविनिधितं कृत्वा ज्ञायतथा गताया हेतुं सं
 सृष्टं ज्ञाय॥ ॥ तद्यथा॥ ॥ ॐ यध्यमहायध्यजयत्रिमितायध्यजयत्रिमिताययध्यस्त्रुन
 संतात्रायधितं॥ ॥ ॐ सर्वसंस्कारयत्रिधुद्धधर्मगतगगनसमर्गतस्वतावविधुद्धमहा न
 ययत्रिवात्रसाहा॥ ॥ ततस्त्वलयनः समयनः दसगंगानदी. वायुकायमानवृद्धकृत्

ॐ २

काटीनामकमननेकस्वन्नन। ॐ दमयत्रिमितायसंस्तुताधितं॥ ॥ ॐ नमो गुरुवत जय
 त्रिमितायस्त्रुनसविनिधितं कृत्वा ज्ञायतथा गताया हेतुं संस्तुतं वृद्धाय॥ ॥ तद्यथा॥ ॥
 ॐ यध्यमहायध्यजयत्रिमितायध्यजयत्रिमिताययध्यस्त्रुनसंतात्रायधितं॥ ॥ ॐ स
 र्वसंस्कारयत्रिधुद्धधर्मगतगगनसमर्गतस्वतावविधुद्धमहा नययत्रिवात्रसाहा॥ ॥
 ॐ दमयत्रिमितायसंस्तुतिलिष्यन्निलियाययिष्यन्निसप्तकायत्रयिष्यावर्षसतायखावदियंति

सं धसकसहसात्रिलियायितानियुक्तिद्यायितानिरुविश्वकि॥ ॥डंनमातृगवतञ्जयत्रिमि
तायल्लनसविनिचितकङ्काजायतथागतायार्हकसंम्यकंवद्वाय॥ ॥तद्यथा॥ ॥
उंयध्ययध्यमहायध्यञ्जयत्रिमितयध्यञ्जयत्रिमिताययध्यल्लनसंतात्रायश्चित॥ ॥
उंसर्वसस्कात्रयत्रिष्ठुद्धधर्मकगगनसमर्गतस्वतावविष्ठुद्धमहानययत्रिवात्रसाहा॥
ऊर्दमयत्रिमितायल्लिविश्वकि॥लियाययिश्चकि॥तदकुलसिक्तिधर्मवाऊकासहसाः

त्रिलियायितानियुक्तिद्यायितानिरुविश्वकि॥ ॥डंनमातृगवतञ्जयत्रिमितायल्ल
नञ्जुविनिचितकङ्काजायतथागतायार्हकसंम्यकंवद्वाय॥ ॥तद्यथा॥ ॥उंयध्य
यध्यमहायध्यञ्जयत्रिमितयध्यञ्जयत्रिमिताययध्यल्लनसंतात्रायश्चित॥ ॥उंसर्व
सस्कात्रयत्रिष्ठुद्धधर्मकगगनसमर्गतस्वतावविष्ठुद्धमहानययत्रिवात्रसाहा॥ ॥
ऊर्दमयत्रिमितायल्लुल्लिविश्वकि॥लियाययिश्चकि॥तस्ययञ्जनक्योक्तानिकर्मवद

नानियलिकुयंगरुमि॥ ॥ उँ नमो हगवतं अयमिमिताय लून नम विनिविदं नं का
वाजायतथागतायार्हकं संस्यकं वदय॥ ॥ तथथा ॥ ॥ उँ यध्ययध्यमहाय
ध्य अयमिमितयध्य अयमिमिताययध्य लून संता वायमिदं ॥ ॥ उँ सर्वसका
वयमिष्ठुद्ध धर्मतगगनसमर्गतस्का वविष्ठुद्ध महा नययविवात्रसाहा ॥ ॥
ऊँ दमयमिमिताय सुकुं लिमिष्टुकि लिमिष्टुकि ॥ तस्य नमा वा वासा नका ॥

उँ

का वा ऊँ दवा वासा वा ना का सुख वता लं प्रया नं ॥ ॥ उँ नमो हगवतं अयमि
मिताय लून नम विनिविदं नं का वाजायतथागतायार्हकं संस्यकं वदय॥ ॥ तथथा ॥
उँ यध्ययध्यमहायध्य अयमिमितयध्य अयमिमिताययध्य लून संता वायमिदं ॥ ॥
उँ सर्वसका वयमिष्ठुद्ध धर्मतगगनसमर्गतस्का वविष्ठुद्ध महा नययविवात्रसाहा ॥ ॥
ऊँ दमयमिमिताय सुकुं लिमिष्टुकि लिमिष्टुकि ॥ तस्य नम वतं नका वदका टी सुस्यं दस

नंदास्यक्तिवृद्धसत्त्वसहस्रं न ह स्तुतं यनामयक्तिवृद्धकृतकासयक्ति. नातकाकावि
मतिवृद्धादयिकवं॥ ॥ उं न मातृगवतं अयत्रिमितायल्लनसविनिविक्त. तं कृपाका
यतथागतायाहं न सम्यक् वदाम॥ ॥ तद्यथा॥ ॥ उं यद्ययद्यमदायद्य. अयत्रिमि
तयद्य. अयत्रिमिताययद्य. ल्लनसंतात्रायश्चिंत॥ ॥ उं सर्वसस्कात्रयत्रिभुवधर्मतः
गगनसमर्गतस्वरावविभुध. महानययत्रिवात्रसादा॥ ॥ ऊं दमयत्रिमितासुतः

लियिष्यन्तिलियापयिष्यन्ति. तस्य वत्तात्रामदात्राका४ वृद्धकृतसमनस्त्वदात्रका वत्रनयुक्तिक
विष्यन्ति॥ ॥ उं न मातृगवतं अयत्रिमितायल्लनसविनिविक्त. तं कृपाकाय. तथागता
याहं न सम्यक् वदाम॥ ॥ तद्यथा॥ ॥ उं यद्ययद्यमदायद्य. अयत्रिमितयद्य
अयत्रिमिताययद्य. ल्लनसंतात्रायश्चिंत॥ ॥ उं सर्वसस्कात्रयत्रिभुवधर्मतः गगनस
मर्गतस्वरावविभुधमहानययत्रिवात्रसादा॥ ॥ ऊं दयुत्रिमियसुतं लियिष्यन्तिलिया

ययिष्यन्ति सखा वलां लोकश्च दुःखमिति तत्रागतस्य वक्ष्ये कथं उच्यते ॥ ॥ ॐ नमो ॥
 गवत अपविमिता यज्ञानम विनिविक्तं न कृत्वा जायते तथा गता या हेतु संस्य के व क्षाय ॥ ॥
 तद्यथा ॥ ॥ ॐ यद्यप्यस्य सहाय्ये अयमिति तद्यद्यप्य अयमिति तद्यद्यप्य सहाय्ये ॥ ॥
 यश्चित् ॥ ॥ ॐ सर्वसंस्कारा यश्चित् ॥ ॥ ॐ सर्वसंस्कारा यश्चित् ॥ ॥
 प्रसादा ॥ ॥ ॐ सर्वसंस्कारा यश्चित् ॥ ॥ ॐ सर्वसंस्कारा यश्चित् ॥ ॥

ॐ

किं संयथि वीयद सत्वेत ह स्वतंदनी तस्य यः ॥ ॐ निरु श्रुत विष्णु ॥ ॐ संति के लक्ष्मि निराता ॥
 नां मृगयश्चिदना क धृ यत नियति न सर्व अनरु जाया संस्य के वा विमति संतापद ॥ ॥
 ॐ नमो गवत अपविमिता यज्ञानम विनिविक्तं न कृत्वा जायते तथा गता या हेतु संस्य के व क्षायः ॥
 ॥ तद्यथा ॥ ॥ ॐ यद्यप्यस्य सहाय्ये अयमिति तद्यद्यप्य अयमिति तद्यद्यप्य सहाय्ये ॥ ॥
 त ॥ ॥ ॐ सर्वसंस्कारा यश्चित् ॥ ॥ ॐ सर्वसंस्कारा यश्चित् ॥ ॥

स्वाहा॥ ॥ ऊँ दमयन्मितायस्सुं. निविश्वंति. निवायंस्वति. नस्यतितावकदा
 विहयि. यमिन्मयकं॥ ॥ उँ नसातगवतः अयन्मितायस्सुनसु विनिविश्वंति कदा
 जायतथागतायाहं संमयकं वदय॥ ॥ तद्यथा॥ ॥ उँ यध्ययध्यमहायध्य अय
 निमित्तयध्य. अयन्मिताययध्य. स्तनसंतात्रायश्चिंत॥ ॥ उँ सर्वसंतात्रायश्चिंत
 धर्मतारागनसमर्गनस्वतावविद्युधमहानययदिवावस्वाहा॥ ॥ ऊँ दमयन्मि

७६

तायस्सुं. तत्राऊं धर्मायथायं वदस्यचकमयितायदा नंदस्यतिस्सं नकि साहसुमहासा
 हसुलाककाकुसुफत्रलयविद्युधकृत्वादानचरुस्ययजायध्यसं वस्ययमानं सुकं गनं
 कुं नकु अयन्मिताय. सुस्ययध्यसुधयमानसकं गनयिनु॥ ॥ उँ नसातग
 वतः अयन्मितायस्सुनसु विनिविश्वंति कदा जाय. तथागतायाहं संमयकं वदय॥ ॥
 तद्यथा॥ ॥ उँ यध्ययध्यमहायध्य अयन्मिताययध्य. अयन्मिताययध्य स्तनसंतात्राय

श्रितं॥ ॥ उँ सर्वसस्का त्रयविधुद्धधर्मगतगगनसमर्गतसत्तावविधुद्धमहानययविवा
 प्रसादा॥ ॥ ऊँ दयप्रिमितायस्वः धर्मलानकस्ययऊयिष्ठाभिः तनमकात्रसमा न
 धर्मयजितवति॥ ॥ उँ नमातगतत अयप्रिमितायस्वनसविनिवित. तं कृनाजाय
 तथागतायाहकंसंमयकंवक्षाय॥ ॥ तथथा॥ ॥ उँ यध्ययध्यमहायध्यअयप्रिमित
 यध्यअयप्रिमिताययध्यस्वनसंतात्रायश्रितं॥ ॥ उँ सर्वसस्का त्रयविधुद्धधर्मगतगगन

३६

समर्गतसत्तावविधुद्धमहानययविवाप्रसादा॥ ॥ ऊँ दयप्रिमितायस्वः धर्मलानकस्ययऊयिष्ठाभिः तनमकात्रसमा न
 धर्मयजितवति॥ ॥ उँ नमातगतत अयप्रिमितायस्वनसविनिवित. तं कृनाजाय
 तथागतायाहकंसंमयकंवक्षाय॥ ॥ तथथा॥ ॥ उँ यध्ययध्यमहायध्यअयप्रिमित
 यध्यअयप्रिमिताययध्यस्वनसंतात्रायश्रितं॥ ॥ उँ सर्वसस्का त्रयविधुद्धधर्मगतगगन
 समर्गतसत्तावविधुद्धमहानययविवाप्रसादा॥ ॥ ऊँ दयप्रिमितायस्वः धर्मलानकस्ययऊयिष्ठाभिः तनमकात्रसमा न
 धर्मयजितवति॥ ॥ उँ नमातगतत अयप्रिमितायस्वनसविनिवित. तं कृनाजाय
 तथागतायाहकंसंमयकंवक्षाय॥ ॥ तथथा॥ ॥ उँ यध्ययध्यमहायध्यअयप्रिमित
 यध्यअयप्रिमिताययध्यस्वनसंतात्रायश्रितं॥ ॥ उँ सर्वसस्का त्रयविधुद्धधर्मगतगगन

धस्यमानं संकंगनयितुं॥ ननु अयमिति ता यस्तु यत्तु संकंगनयितुं॥
 उं नमातृगवत अयमिति ता यस्तु नमस्विनिचितः तं कृता जायतथा गताया हेतुं संस्य संवदा
 य॥ ॥ तद्यथा॥ ॥ उं यत्तु यत्तु महायत्तु अयमिति ता यत्तु अयमिति ता यत्तु
 न संस्य ता यत्तु ॥ उं सर्वसंस्कारा यत्तु उं धर्मो तं गगनसमर्गं स्वतावतिष्ठे
 महानययति वा ॥ ॥ ऊथा रत्ना वा महानययति ॥ उं दकयति यत्तु उं दकयति

१०

विद्वग्नयितुं॥ ननु अयमिति ता यस्तु यत्तु संकंगनयितुं॥ ॥ उं नमातृगव
 त अयमिति ता यस्तु नमस्विनिचितः तं कृता जायतथा गताया हेतुं संस्य संवदा य॥
 ॥ तद्यथा॥ ॥ उं यत्तु यत्तु महायत्तु अयमिति ता यत्तु अयमिति ता यत्तु
 न संस्य ता यत्तु ॥ उं सर्वसंस्कारा यत्तु उं धर्मो तं गगनसमर्गं स्वतावतिष्ठे
 महानययति वा ॥ ॥ ऊं दसयति ता यस्तु लिखितं लिखायति लिखितं लिखायति

यिथकिंनदससदिहसर्ववक्ष्येनयसर्वतथागतावेदितायकिताऊवतविथकि।
 उंनमातगावतअयविमितायल्लनसविनिचिततंक्रवाऊयतथागतायार्हंनसंस्पकंवद्धा
 य॥ ॥तद्यथा॥ ॥उंयद्येयद्यमहायद्यअयविमितयद्यअयविमिताययद्यः
 ल्लनसंतायायचितं॥ ॥उंसर्वसंकात्रयाविष्ठद्वमतेगगनसमर्गतस्यतावविष्ठ
 द्महालययनिवात्रसाहा॥ ॥अथतगावागतस्याम्वयायामिमागाथमहासट्॥४

॥ॐ॥ ॥दानववनसमर्गतवद्ध॥दानववाधिरागाननसिंह॥दानववस्यवद्धयक्रिसद
 ॥कात्रनिकेस्ययत्रयविसाक्त॥ १ ॥शीलववनसमर्गतवद्ध॥शीलववाधिरागाननसिंह॥
 शीलववस्यवद्धयक्रिसद॥कात्रनिकेस्ययत्रयविसाक्त॥ २ ॥क्रात्रिववनसमर्गतव
 द्द॥क्रात्रिववाधिरागाननसिंह॥क्रात्रिववस्यवद्धयक्रिसद॥कात्रनिकेस्ययत्रय
 विसाक्त॥ ३ ॥वीर्यवलनसमर्गतवद्ध॥वीर्यववाधिरागाननसिंह॥वीर्यववस्य

[illegible]

ॐ यद्यद्यद्यमदायद्यजयत्रिमितयद्यजयत्रिमिताययद्यल्लनसंतात्रायश्चिंत॥
 ॐ सर्वसंस्कारयत्रिभुङ्क्ष्वर्मातंगानसमर्गतस्वताव. विभुङ्क्ष्वमहानययत्रिवायसादा
 ॥ॐॐॐ॥ ॐ दमवायद्रुगवानतमनातवहिरुव४तं धवाधिसत्वा४साक्षरसर्ववर्ती
 यस्मिदवमान्मासवगवउगंवेवश्चलाकारगवतातायिगमत्यनंचनिति॥ॐॐॐ॥
 ज्ञायजयत्रिमितायनाम४महायानसंज्ञसमाय॥ ॥यधर्माॐत्यादिसमदायन

दियत ॥ ॥१॥ ॥२॥ ॥३॥ ॥
 ॥ १ ॥ वरुणसत्त्व उवाच ॥
 संनमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं निवाच ॥
 नृद्विषुधिवी ॥ ३ ॥ मम व
 तालयादस्य यनं उदमं कुमत



ॐ नमः श्रीवज्रसत्त्वाय ॥
 नीलं कुननिवाकालं ॥ २ ॥
 निवाकालं ॥ मम मम निरुत्तं
 ऊसनीनेक उष्ट्री स्वर्गवयं या
 गधुलं ॥ ४ ॥ आकाराकाय

॥३॥

॥ वलातस्य वेवाचनः दक्षिणमलसंरुः यविमज्जितातः उरुवज्रभायसिद्धि ॥ ५ ॥ ॥२॥
 तदवीयज्ञायामिताधुता ॥ वरुणसत्त्व उवाच ॥ यद्यद्यज्ञायामिता ॥ ४ ॥ वेवाचनसि
 ब्राह्मणः वाममश्वाज्जितातः अक्षात्तदयज्ञातः लवातो अभाययदं ॥ ५ ॥ वेवा
 चनमहाजातिधुक् वधुमहाकलः स्वतः पीतः वक्रः श्वामः वरुवक्रवत्त्वहं ॥ ४
 ॥ १ ॥ यनमग्नेवज्रावाच्यवज्रयं ध्वं ध्वं ध्वं ध्वं ॥ यज्ञज्ञानासमालिखसर्वतथाग
 त्वहं ॥ ६ ॥ तासाहवगगनगं ऊक्षितिगह्वरुदय ॥ कर्तुं वरुवज्रयानिजिज्ञा

यादुलोकसुख ॥ २ ॥ सनातनकर्मरुचीकायसर्वद्योवननविक्रि ॥ सास्यसेवी
यज्ञातःवीजसमकृतदकं ॥ १० ॥ रुद्रदहिनऊमांतकुरुकवामअयवाडिताम
यज्ञातादयगीवागुक्षअसुतकधुत्रि ॥ ११ ॥ अवलदहिनवाहवामवाहःतर्किवाड
नीलदहिनऊनःवामऊनसहावल ॥ १२ ॥ उष्ट्रीयवकवर्लिस्यगस्यस्ययनंसम ॥ अष्टद
ष्टरवाऊनयातालसंरुितामहं ॥ १३ ॥ अथयज्ञयावमिताडवाय ॥ १४ ॥ दुरुदवीस

माहवःवामकल्लाहवन्नाकमाका ॥ १५ ॥ माहवतिलावनाःदयवतिमा
सकिःवागवतिःयाहुवादवीःतावावकवति ॥ १६ ॥ युधिवीवावनास्याताःआयवाकुश
मासकिःतऊवाकुशयाहुवावाःतावायकिर्लिता ॥ १७ ॥ वऊसखावाव ॥ १८ ॥ विष्टवऊकु
मिष्टयनःदुरुदिसंवऊविःमाकासगगधराकसध्वमस ॥ १९ ॥ तऊयवववावनः
दहिनवलसंतवःयश्चिमअमिताहःउरुअमायसिद्धि ॥ २० ॥ अरुमकनवावनाःतेसतद

वीसासकिः वायव्याद्युनादवीः ॐ सामधी. आर्यानावा ॐ निरातसद्युतं ॥ २१ ॥ अग्रसुस
 त्रयवडाः नैअतवसदवडाः वायव्यायंगंवडाः ॐ क्षानस्यप्रसवडा ॥ २२ ॥ यव्वदाअयनिका
 यामेयीयक्रितिगर्तः दक्षिनसुयनिकायाः वरुयानिसगरर्तव ॥ २३ ॥ यश्चिससुयनिकायाः वा
 कसुवः मंरुधीः सर्वनीववनविष्कृतिः समकुरुदुरुव ॥ २४ ॥ यव्वदावकुमाकुकः द
 क्षिनदावयशुकुकः यश्चिसदावयशुकुकः उरुवदावविद्याकुकः ॥ २५ ॥ ॐ क्षानका

[illegible]

[illegible]

सा नयमानय कोमल शुद्ध लोकोत्कृष्ट वती नमस्ते पुति ह नवलया कालः
यजोत्तमसु नमः स्वाहा ॥ दिति यामाला मनु ॥ नमः ॥ सर्वो माय प्रिय प्रकथ ॥
सर्वे धारागत्य ॥ सर्वोत्तम माय प्रकथ मदा प्रकथ नस्तु टय हं कुमय २ हं कुट हं मां
॥ हनिय माला मनु ॥ ॐ नित्य सु वला नां सामा न्य मनु ॥ ॐ हं सु वल हं रुट ॥ ॐ हं
मा वल हं रुट ॥ ॐ पीता वल हं रुट ॥ ॐ प्रका वल हं रुट ॥ ॐ हं मा वल हं रुट ॥

विष्णु मनु ॥ ॐ हं सु वल हं रुट ॥ मूल मनु ॥ ॐ प्रह्लाया प्रमिन
हं रुट ॥ द्वितीय मूल मनु ॥ ॐ वो ह नि हं रुट ॥ हनीय मूल मनु ॥
ॐ विष्णु प्रह्ला वई निरुल २ मका वई निधि निरु वई निः
स्वाहा ॥ मा गो मनु ॥ ॐ हं सु वली हं रुट ॥ ॐ मा ह व जि हं रुट ॥
ॐ विष्णु न व जि हं रुट ॥ ॐ नान व जि हं रुट ॥ ॐ हं ह्या व जि हं

[illegible]

२ उं नमो श्रीदशकाय ॥ उं नमो ब्रह्मकाय ॥ उं नमो ज्ञानकाय ॥
नमः ॥ उं वज्रकाय ॥ उं हृत्कण्ठकाय ॥ उं वज्रकाय ॥ उं वज्रकाय ॥ उं वज्रकाय ॥
उं ज्ञानकाय ॥ उं वज्रकाय ॥ उं वज्रकाय ॥ उं वज्रकाय ॥ उं वज्रकाय ॥
मः ॥ समस्तकायवाकेषु वज्रना ॥ उं वज्रकाय ॥ उं वज्रकाय ॥ उं वज्रकाय ॥
मकज्जसिम्बलपत्रं गुणगहसु वज्रमुखाय वज्रकाय ॥ उं वज्रकाय ॥

दृष्टसत्त्वयाद्यहनिधमहाविघ्नयागकविकृतानानः सर्वहृतयक
जुहुटहासनादिनव्याद्युचमनिधसमः कृपूरसर्वकर्मनिमः किं दुः
यत्रयुक्ता न सर्वमेतु हिन्दयत्रमूडाः आकर्षय रसाग्रहावा न सर्व
कुतान्मथ २ निर्मथ सर्वरूपा न ॥ पुठेद्यय २ ममाहि स्नानमधुले मध्व
वेवन्धनजाम्बिगानको नृकृपूरममकार्यन्द ह २ यत्र २ सर्वयायान्मा

[illegible]

वसत्वानां वाधय वाधय ॥ सभाधयः ॥ सुम २ संकुमय २ सर्वविह वाधनि
॥ कूट २ संकूटय २ सर्वभा ॥ कूट २ सुकूटय २ सर्वविधय वज्र कूटय २
वज्रवज्रकूटय वज्रमट वज्रमथ वज्रनथा रुसनील वज्र सुवजा य
स्वाहा ॥ ॐ यज्ञानक कर्हं रुट ॥ ॐ वज्रकाधर्हं कनर्हं गार्हं गार्हं रुट
॥ ॐ नमस्तुमनकाय वाक विरु वज्रानः नमा वज्रकाद्य ॥ ॐ रु

ॐ नमाट किंवा जाय ॥ ॐ वज्रकाधरुयग्रवर्हं रुट ॥ ॐ
ट किंवा जर्हं रुट ॥ सुवा रुदीय रुट ॥ ॐ गार्हं गार्हं रुट ॥
नालन रुज गसयौ वा नन रुट ॥ ॐ रुट ॥
ॐ निट किंवा जर्हं रुट ॥ ॐ नमा प्रल रुयाय ॥ ॐ नमा
ॐ नील रुट ॥ ॐ नील रुट ॥ ॐ विनिश्वज सत्व रुट ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय सर्वार्थसाधनी स्वाहा अक
ट आ क ट व ऊ रु ड हूं हूं रू रू रू रू स्वाहा ॥ १ ॥ गं नि नी ल द धु स्य ह
द य ॥ ६ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमः ३ श्री वच क वमी हूं ॥ म
म सर्व सत्त्वानां कृष्णानि युष्टिं कृत्वा हा ॥ ॐ वज्र का ध अ म न कृ ठ
लिहूं शिन्दे शिन्दे हूं हूं रू रू रू रू स्वाहा ॥ १ ॥ गं ति उ श्री वच क वति

यदुट्॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ वज्र उक्थयदुट्॥ वज्र उक्थयदुट्॥
सर्वकर्मसु यतिहृतायदुट्॥ वज्र कुलसंज्ञासुनकत्रायदुट्॥ ॐ ॐ ॐ ॐ
हं हं दू दू दू दू स्वाहा ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ ॐ नमो
भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
धनमावज्जुको धायमहादृष्टकटरो नवायश्रुसिम्भालयनमुयोऽ

हस्ताय॥ॐ अमृगकृष्णलीमववयाहि २ किं सु २ च २ ह न २ द ह २ ग ऊं
विस्फुटय २ सर्व विघ्न विनायक नमो रागाय निजी विना नको नायः
स्वाहा॥ॐ विघ्नान्क कर्हं रुट्॥ॐ वज्रकाधर्षला क विजय हं लिङ्ग हं
रुट्॥ॐ निविघ्नान्क कस्य रुदय ॥ ४ ॥ॐ नमो प्रलुपयाय॥ॐ न
मो महावनाय॥ॐ सप्त सप्त विमल रु नमो महावना हं॥ॐ महावना हं

रुट्॥ॐ वज्रकाध महावना हं रुट् २ हं हं हं रुट् रुट् रुट् स्वाहा॥ॐ
धन २ धिनि २ धन २ सर्व वज्र कल आवर्तय स्वाहा॥ अमृक मात्रय रुट्॥
ॐ नमः समक वज्र धा सर्व वल आवर्तय महावना कटवः नगल अत्र लम
छुल माय अ निवज महावना विगन धा अर्जि न॥ॐ कल २ टि २ टि २ टि
२॥ गल द ह २ न ऊव नि निलि २ व २ महावना वज्र ऊं क गला लाय स्वा

[illegible][illegible]

मलवाः समुद्रमध्यागलवाः वदन्त्या गलवाः किं ह्यस्य मध्यागलवाः ज
ज

आशा शरदा

2825

ASHA ARCHIVES



ASHA ARCHIVES

2825

